हज़रत खाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह – जीवन व शिक्षण

इसलाम धर्म शिष्टाचार व पवित्र स्वभाव की शिक्षा देता है। दुसरों के साथ कृपा व दया एवं प्रेम से पेश आने की मार्गदर्शन देता है। अच्छाई का बदला अच्छाई से देने एवं अपने अहसान करने वालों एवं दया व कृपा करने वालों का धन्यवाद करने का प्रवचन देता है।

जैसा के अल्लाह तआला का आदेश हैः-

भाषांतरः अच्छाई का बदला अच्छाई के सिवा और क्या हो सकता है?

(सुरह अर रहमानः 55:60)

यथा एहसान का बदला एहसान ही है।

कोई किसी कठिनाई में व दरिद्रता में फंसे व्यक्ति की सहायता कर के एहसान करता है तो कोई किसी दुष्करता व दुःसाध्यता की सहायक कर की कृपा करता है, कोई किसी दुखी के साथ आश्वासन कर के एहसान करता है तो कोई किसी परेशान स्थिति में रहने वाले के साथ सहानुभूति कर के एहसान करता है।

कोई किसी असहाय व दुर्बल को सहारा दे कर एहसान करता है तो कोई किसी भयभीत व्यक्ति के लिए शान्ति दिला कर एहसान करता है एवं कोई किसी रोगी का इलाज करवा कर एहसान करता है तो कोई किसी विधवा व अनाथ का योगदान कर के एहसान करता है।

इस प्रकार एहसान व सहायता करने वाला हमारा उपकारी व सहायक तो है परन्तु इस का ये एहसान सब से बड़ा एहसान नहीं।

क्यों के धन व सम्पत्ति खर्च कर के किसी की जान बचाना ये इतना विशाल एहसान व कृपा नहीं बल्कि अपनी कठिन मेहनतों एवं कष्ट उठाकर उसके द्वारा किसी का इमान बचाना सब से बड़ा एहसान है।

सोंचना चाहिए के जब इसलाम धर्म ने सांसारिक एहसान करने वाले सहायक के एहसाम मानने एवं उसका धन्यवाद प्रदान का इस प्रकार आदेश दिया है तो फिर सहायक के एहसान पर हमें किस दर्जे धन्यवाद प्रदान का प्रदर्शन करना चाहिए के जिस ने हमें ना केवल सांसारिक जीवन के नियम सिखाए बल्कि इसलाम धर्म हम कत पहुँचाया।

जिस ने हमें जीवन का ढंग एवं बन्दगी का तरीका सिखाया, सुव्यव्यस्था के सिद्धान्त से सचेत किया तथा समाज के सभ्याचार से उजागर किया एवं शिष्टाचार, पवित्र आदतें, उच्च चरित्र तथा उत्तम स्वभाव की शिक्षा दी।

वह उच्च जात समुदाय के सहायक, ऑलिया के इमाम सुल्तानुल हिन्द हज़रत खाजा मोइनउद्दीन सजज़ी ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह की है।

जिन्हों ने भारत (हिंदुस्तान) की धरती पर इसलाम के दीपक को उजागर किया, हज़रत खाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह ने प्रमुख शिष्टाचार का वह आदर्श पेश किया के आप के शिष्टाचार की पवित्रता एवं चरित्र की उत्तमता देख कर लोग तन्हा-तन्हा एवं झुण्ड-झुण्ड इसलाम की सीमा में प्रवेश हुए।

हज़रत ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह ने भारत के नागरिकों को इसलाम की सम्पत्ति एवं मार्गदर्शन के वरदान दे कर जो एहसान व कृपा की, इस की आभार व कृतज्ञता करते हुए आप का वर्णन करना, हिंदुस्तानियों का फर्ज़ है एवं इन पर उधार भी।

जामेअ तिरमिज़ी में हदीस पाक हैः-

जिस ने लोगों का धन्यवाद संपादन नहीं किया वह अल्लाह तआला का आभारी नहीं हो सकता।

(जामेअ तिरमिज़ी, हदीस संख्याः 2082)

हज़रत सैयदना ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह के विशाल एहसान व कृपा का हम कोई बदला तो नहीं चुका सकते बल्कि आप का कुशल वर्णन कर के गुलामी का तोहफा पेश करते हैं तथा अपनी प्रेमभाव का प्रदर्शन करते हैं, एवं ये धन्य वर्णन हमारे पापों का प्रायश्चित घोषित पाता है।

जैसा के जामेअ उल अहादीस, जामेअ कबीर एवं कंज़ुल उम्माल में रिवायत हैः-

भाषांतरः पैगम्बरों का ज़िक्र करना इबादत है एवं ऑलिया व सालेहीन का ज़िक्र करना पापों का प्रायश्चित है।

(जामेअ उल अहादीस, हदीस संख्याः 12503 / अल जामेअ उल कबीर लिस सुयूती, हदीस संख्याः 12685 / कंज़ुल उम्माल, हदीस संख्याः 32247)

धर्म का प्रचार करने वालों के लिए एक विशाल आदर्श

खाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह ने इसलामी शिक्षण के प्रसारण व प्रचार को अत्यन्त ही सुंदरतापूर्वक रूप से परिणाम दिया, जिन्हें आज कत किसी ने फरमामोश किया है ना कोई इन की उच्च सेवाओं को नज़रअंदाज़ व अनदेखा कर सकता है।

जब आप ने सत्य के झण्डे को बुलंद किया तो विरोधियों ने विरोध की, शत्रुओं ने शत्रुता, प्रत्येक ओर से फेर के जाल बिछाए जाने लगे, ऐसे समय यदि आप रहमतुल्लाहि अलैह चाहते तो सेना व समूह के द्वारा विरोधियों से प्रतिशोध ले सकते थे तथा उन्हें मुंह तोड़ जवाब दे सकते थे।

परन्तु आप रहमतुल्लाहि अलैह ने कभी ऐसा नहीं किया, बल्कि हिकमत व बुद्धिमानी के उच्चता को अपनाया, जिस की बरकत इस प्रकार प्रकट हुई के लोग आप के सत्यता को देख कर प्रभावित हो गए, आप के ज्ञान व दृढ़ता, उच्च चरित्र से प्रभावित हो कर लोग उत्तम शिष्टाचार वाले एवं पवित्र गुण व स्वभाव के पैकर हो गए।

आप के केवल दिल्ली से अजमेर तक यात्रा के दौरान 90,00,000 लोग इसलाम से आभूषण हुए।

आज के इस फितने के दौर में इसलामी शिक्षा सामान्य करने एवं धर्म के प्रचार के लिए प्रवचन व उपदेस का तरीका अपनाने की अवश्यकता है क्यों के इसलाम का सन्देश आपसी प्रेम व मुहम्मत एवं स्नेह को फैलाने एवं शान्ती व सलामति का प्रसारण है।

हमें धर्मनिष्ठ एवं सालिहीन पूर्वजों के प्रचार के ढंग को अपनाना चाहिए। हिन्द के खाजा हज़रत खाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह जिन्हों ने भारत में इसलाम के दीपर को दीप्तिमान किया एवं इसलाम के सन्देश को सामान्य किया जब आप भारत आए तो अपने साथ सेना, तीर व तलवार ले कर नहीं आए बल्कि नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के शिष्टाचार, उच्च चरित्र तथा इसलामी स्वभाव ले कर आए।

हज़रत सैयदना ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह उपदेश करते तो क़ुरानी आयतों एवं सरकार की हदीसों एवं धर्म के पूर्वजों के कथन व कर्म का वर्णन कर के लोगों की सुधारता करते।

जिस का ये प्रभाव होता के लोग अधर्म से तौबा व प्रायश्चित कर के आप के विश्वासियों में शामिल हो जाते। आप रहमतुल्लाहि अलैह के धन्य सम्मेलन में शरीअत व तरीखत एवं हक़ीक़त व मअरिफत की ओर लोगों को ध्यान दिलाया जाता तथा फर्ज़ व सुन्नतों के संपादन, परिश्रम, पवित्रता व शुद्धता, सत्यता, अल्लाह का ख़ौफ़ व भय तथा अल्लाह तआला के निर्माण की सेवा की शिक्षा दी जाती।

हज़रत खाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह ने अपने खलीफों को भारत के अनेक क्षेत्रों में इसलाम के प्रचार की ज़िम्मेदारी देकर रवाना किया।

आप रहमतुल्लाहि अलैह ही का एहसान है के भारत की सीमा के प्रत्येक क्षेत्र में इसलाम का सन्देश सामान्य व आम हो गया। इस सुन्हरे --- से संबंधित हज़रत खाजा निज़ामउद्दीन ऑलिया महबूब इलाही रहमतुल्लाहि अलैह के खलीफा हज़रत सैय्यद मुहम्मद बिन मुबारक किरमानी रहमतुल्लाहि अलैह आदेश करते हैः

हज़रत की और करामत ये है के भारत के राज्य में पश्चिम के अंत सिरे तक प्रत्येक ओर कुफ्र व बुत परस्ती का दौर था। लोग धर्म एवं धर्म के आदर्श से अज्ञात थे। अल्लाह तआला और अल्लाह के रसूल से अचेत थे।

विश्वास जातियों के इस महान व विशिष्ट चरित्र के क़दमों से इस धरती में कुफ्र के अंधेरापन छट गया एवं प्रत्येक ओर इसलाम का उजाला फैल गया। आप वास्तव में धर्म के मोइन हैं। इस धरती पर जो व्यक्ति भी मुसलमान हुआ एवं लोग भविष्य में मुसलमान होते रहेंगे क़ियामत तक उन का सवाब शैखुल इसलाम खाजा हसन सजज़ी रहमतुल्लाहि अलैह को पहुँचता रहेगा।

(सियर उल ऑलियाः 57)

आपका धन्य जन्म एवं उच्च वंश

ईरान के सोबा सजिस्तान सजज़ स्थान में 14, रज्जब 536 हिज्री सोमवार सवेरे प्रभात के समय आप का जन्म हुआ। आप आदरणीय पिता के नाते से हुसैनी एवं आदरणीय माँ के नाते से हसनी सादात से हैं।

पिता के सिलसिले से 12 वास्तों और माँ के सिलसिले से 11 वास्तों से हज़रत सैयदना अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से जा मिलता है।

सादात घराने के दीपक होने की स्थिति से आप पर कृपा के लक्षण उत्पन्न थे। आदरणीय माँ का नाम *उम्मुल वरअ* था। आप की आदरणीय माँ अपने नाम के अनुसार धर्मनिष्ठ व दृढ़ता का प्रतिरूप थीं। पूज्य पिताजी का नाम *सैय्यद ग़यास उद्दीन हसन अल हुसैनी* था। जो तहज्जुद गुज़ार व रात भर इबादत करने वाले बुज़ुर्ग थे।

(इखतेबास उल अनवार, पः 346)

सगर्भता में करामत का प्रदर्शन

हज़रत ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह की आदरणीय माँ हज़रत उम्मुल वरअ रहमतुल्लाहि अलैहा वर्णन करती हैः मैं ने देखा के गर्भावस्था में जिस समय से मोईन उद्दीन हसन के शररी में आत्मा ड़ाली गई इस समय से इन के जन्म तक में प्रत्येक दिन अपने कानों से आवाज़ सुना करती के वह रात से दिन चढ़ने तक कलिमा *लाइलाहा इलल्लाहु मुहम्मदुर रसूलउल्लाह* का ज़िक्र किया करते।

(सीरत खाजा ग़रीब नवाज़, पः 168)

ज्ञान के ज़ाहिरी व बातिनी सारांश

हज़रत ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह 15 वर्ष की उम्र को पहुँचे या आप की उम्र इस से भी कम थी के आप के आदरणीय पिता का देहान्त हो गया, 2 वर्ष बाद पूजनीय माँ का भी देहान्त हो गया। विरासत में एक बाग़ था। आप इबादत व ज़िक्र में व्यस्त रहते हुए कृषि कर्म किया करते।

परन्तु जब हज़रत इबराहीम खन्दूरी रहमतुल्लाहि अलैह से वरदान मिली तो आप को अधिक ज्ञान प्राप्त करने की मनोकामना हुई, एवं आप ज़ाहिरी ज्ञान में उच्चता प्राप्त करने के लिए नीसापूर गए तथा उच्च ज्ञान प्राप्त कर के ऐसे उत्कृष्ट हो गए के समय के नामवर विद्वान आप की सेवा में अपने प्रश्नः व विषय एवं समस्या पेश करते तथा आप उन्हें समस्या का समाधान बतलाते तथा विस्तारयुक्त व विस्तृत उत्तर देते।

(मिरातुल असरार, तबक़ाः 17, पः 5930

ज़ाहिरी ज्ञान के समापन के बाद आप हज़रत खाजा उसमान हारूनी रहमतुल्लाहि अलैह की सेवा में उपस्थित हो कर इरादतमंद (मुरीद) हुए। 20 वर्ष सेवा की, यात्रा व निवास, एकांतता, आठो पहर हज़रत शैख की के विशेष ध्यान रही, बातिनी उच्चता व आत्मिक स्तर ऐसा प्राप्त किया के खुद पीर व मुरशीद को आप पर गर्व था।

ज्ञान

हज़रत शैख फैज़उद्दीन बलक़ी रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैं के मुझे कुछ समस्या पेश हुए, जिन के कारण से मैं कठिन परेशान था। मुझे इन का समाधान नहीं मिल रहा था, मैं इन प्रश्न को एक पर्चे पर लिख कर हज़रत ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह की सेवा में उपस्थित हुआ।

श्रोता की अधिक संख्या के कारण से मैं अपने प्रश्नों को पेश ना कर सका, मैं समारोह में शान्ति बैठा रहा। कुछ देर बाद हज़रत ने मुजे निकट बुलाया एवं एक पर्चा प्रदान किया, जब मैं ने इस पर्चे को खोला तो इस पर मेरे इन्हीं पूछे गए प्रश्न के विस्तृत उत्तर थे।

(सीरत ग़रीब नवाज़, पः 308)

सरकार के दरबार से आपका व्याख्यान

खाजा ग़रीब नवाज़ सुल्तान हिन्द रहमतुल्लाहि अलैह हज़रत खाजा मोईनउद्दीन हसन सजज़ी रहमतुल्लाहि अलैह अपने पीर व मुरशीद हज़रत खाजा उसमान हारूनी रहमतुल्लाहि अलैह के धन्य कथन लिखते हैं के ये दुआ जैसे इबादुल्लाह मोईनउद्दीन हसन सजज़ी रहमतुल्लाहि अलैह बग़दाद को गए।

हज़रत खाजा उसमान हारूनी को तलाश किया, लोगों ने कहा के हज़रत खाजा जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अलैह की मसजिद में नमाज़ के लिए गए हैं, ये सुन कर मैं हज़रत खाजा जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अलैह की मसजिद में गया तथा हज़रत उसमान हारूनी रहमतुल्लाहि अलैह की पावन ज़ियारत व मुलाकात से संबोधित हुआ। उस समय बहुत से उच्च मशाइक़ की सेवा में उपस्थित थे।

आप ने आदेश किया के 2 रकात नमाज़ पढ़ों! मैं ने आदेश को संपादन किया, आप खड़े हो गए एवं मेरा हाथ पकड़ कर आकाश की ओर मुंह किया एवं ज़बान से कहा के ईलाही! मैं इन को तेरे ज़िम्मे करता हुँ, इसके बाद बग़दाद से रवाना हो कर मक्का आए तथा ये दरवेश हुआ था।

आप मुझे पैदल कअबा ले गए तथा फक़ीर के लिए कुशलता की दुआ की, आवाज़ आई के हम ने मोईनउद्दीन हसन सजज़ी को स्वीकार किया, वहाँ से रवाना हो कर मदीना उपस्थित हुए, मैं भी साथ था, जब हज़रत नबी

करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पावन रौज़े पर पहुँचे तो मुझ से आदेश किया के सलाम करो! मैं ने सलाम निवेदन किया- धन्य रौज़े से आवाज़ आई *वअलैकुम अस्सलाम या खुतुबउलमशाइक़* इस आवाज़ के आने पर हज़रत शैख ने निर्देश किया के आप का मामला उच्च स्तर को पहुँचा।

(हयात खाजा, पः 20/21)

आपके आचरण

क़ुरान पाक की तिलावत

हज़रत ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह का रमज़ान के अतिरिक्त साधारण दिनों में ये दिनचर्या था के प्रत्येक दिन व रात में 2 बार क़ुरान करीम समाप्त किया करते, एवं प्रत्येक बार आवाज़ आतीः "हम ने तुम्हारे क़त्म को सवीकार किया है" आप ने हदीस पाक के आधार में कहा के जो व्यक्ति अल्लाह तआला के कलाम की ओर देखता है एवं तिलावत करता है अल्लाह तआला उसे 2 सवाब प्रदान करता है, एक क़ुरान करीम पढ़ने का तथा दुसरा देखने का, प्रत्येक अक्षर के बदले 10 नेकियाँ प्रदान होती हैं तथा 10 बुराईयाँ मिटा दी जाती है।

ग़रीब नवाज़ी की प्रतिभा

हज़रत खाजा ग़रीब नवाज़ मोईनउद्दीन हसन चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैह में दानशीलता के उच्च गुण आरम्भ से उपलब्ध थे। अर्थात आप रहमतुल्लाहि अलैह के जीवन में ये बात मिलती है के अभी उम्र 3 वर्ष ही थी के आप अधिकतर अपने हम उम्र साथियों को घर लाते एवं बड़े प्रेम व स्नेह के साथ उन्हें खाना खिलाते।

(सीरत खाजा ग़रीब नवाज़, पः 170)

गरीब लड़के के लिए अपनी खुशियाँ त्याग करना

हज़रत ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह के बचपन की घटना है के एक बार ईद के दिन आप अपने घर वालों के साथ अत्यन्त उच्च वस्त्र पहन कर ईदगाह जा रहे थे, रास्ते में आप ने देखा के एक अंधा लड़का फटे पुराने वस्त्र पहने बैठा है।

आप रहमतुल्लाहि अलैह से इस की गरीबी व दरिद्रता देखी ना गई, तुरंत आप इसे अपने साथ घर ले गए, अपना नव एवं मूल्यवान वस्त्र इसे दे दिया तथा खुद सादा वस्त्र पहना एवं इस गरीब के साथ ईद की नमाज़ संपादन की।

(सीरत खाजा ग़रीब नवाज़, पः 171)

गरीबों की सहायता

हज़रत खाजा ग़रीबनवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह दरिद्रों की सहायता करते, गरीबों व निस्सहाय की मदद करते, विधवाओं एवं अनातों की सहायता करते, गरीबों व निर्धन लोगों का अभिदान करते अर्थात आप रहमतुल्लाहि अलैह प्रत्येक दिन इशराख की नमाज़ के बाद अपने इलाक़े की विधवा एवं बूढ़ी महिलाओं की सहायता करते तथा इन की मदद करते।

आप के लोकोक्ति में हैः-

जो व्यक्ति भूकों को पेट भर खिलाता है तो इस के एवं नरक के बीच 7 हिजाब (परदे) पढ़ जाते हैं, एवं आदेश किया के जो भूकों को खाना खिलाता है अल्लाह तआला इस की 1000 अवश्यकता व हाजतें पूरी कर देता है। इसे नरक से मुक्ति दिलाता है तथा जन्नत में इस के लिए एख महल तैयार होता है।

आप रहमतुल्लाहि अलैह ने फरमाया के अल्लाह तआला के पास विनम्रता की नम्रता, अवश्यकता लोगों की हाजत एवं भूकों को खाना खिलाने से बढ़ कर कोई और पालन नहीं।

इसी लिए आप के मतबक़ में दैनिक इस प्रकार खाना पकाया जाता के नगर के सम्पूर्ण गरीब व दरिद्र पेट भर खाना खाते, क़ान्खाह के खर्च के लिए सेवक उपस्थित होते, आप अपने मुसल्ले का भाग उठा कर कहतेः जिस प्रकार पैसों की अवश्यकता है यहाँ से ले लो।

आप रहमतुल्लाहि अलैह की दानशीलता व उदारता से संबंधित हज़रत खाजा खुतुब उद्दीन बख्तयार काकी रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैं के मैं ने कभी किसी माँगने वाले या फक़ीर को आप के दर से वंचित व महरूम जाते नहीं देखा।

भय व ख़ौफ़

हज़रत ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह विलायत के उच्च स्तर पर आभूषण होने के बावजूद आप के ख़ौफ़ व भय की ये स्थिति रहती के आप अल्लाह तआला के ख़ौफ़ व भय के कारण कांपते थे तथा कहतेः अए लोगो! यदि तुम को ज़मीन में दफन लोगों का थोड़ा सी भी स्थिति मालूम हो जाए तो तुम (मारे भय व ख़ौफ़ के) ठहरे-ठहरे पिघल जाओगे तथा नमक की तरह घुल जाओगे।

(मसालिक उस सालिकीन)

आपके शिक्षण

हज़रत खाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह ने अपना सर्व जीवन निर्माण की सेवा की भावना के साथ बिताया। आप ने मानव चरित्र का

किस दर्जे लिहाज़ रखा, अल्लाह तआला की निर्माण के साथ आप ने किस प्रकार स्नेह व प्रेम का व्यवहार किया, आप रहमतुल्लाहि अलैह के नमाज़ शिक्षण से अंदाज़ा लगाया जा सकता हैः-

उच्च गुण क्या हैं?

हज़रत ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह ने कहाः अल्लाह तआला के पास सब से अधिक प्रय कौन सा गुण हैं? कहाः

(1)- दुखी लोगों की फरयाद व विनती सुनना।
(2)- गरीबों की अवश्यकता संपादन करना एवं
(3)- भूकों को खाना खिलाना।

एवं फरमायाः जिस में 3 गुण हों समझो के वे अल्लाह तआला से प्रेम व स्नेह रखता हैः

(1)- नदी की तरह दानशीलता।
(2)- सूर्य के जैसी दयालुता।
(3)- धरती की तरह विनम्रता।

(सियर उल ऑलियाः 56)

फर्ज़ व सुनन के संपादन पर निर्देश

आप ने फर्ज़ व सुन्नतों के संपादन का निर्देश करते हुए फिक़्य अब लैल की पुस्तक के हवाले से फरमाया के दैनिक एक फरिश्ता पुकार कर कहता हैः

जो व्यक्ति अल्लाह तआला का फर्ज़ संपादन नहीं करता वह अल्लाह तआला की मुक्ति से दूर हो जाता है, दुसरा फरिश्ता कहता हैः जो रसूल

करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की धन्य सुन्नतों को छोड़ता है वह आप की शफाअत से वंचित व महरूम हो जाता है।

पवित्रता व शुद्धता का महत्व

हज़रत ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह ने कहा के जो बन्दा वुज़ू के साथ सोता है फरिश्ते इस की आत्मा को अल्लाह तआला के अर्श के नीचे ले जाते हैं, अल्लाह तआला का आदेश होता है के उसे नूर का ताज पहनाओ तथा जो व्यक्ति बिना तहारत सोता है उस की आत्मा फरिश्ते प्रथम आकाश से गिरा देते हैं।

धन्य देहान्त

हज़रत ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह के पूर्ण एहसान व कृपा के आशिर्वाद से कुफ्र के अत्याचार में फंसे तौहीद व रिसालत के प्रकाशन व नूर से जगमगाने लगा, आप ने सम्पूर्ण निर्माण पर कृपा व स्नेह, रहमत व प्रेम के पूल बरसाए।

आप रहमतुल्लाहि अलैह अल्लाह व रसूल की मुहब्बत का प्रवचन व दर्स देते रहे। जब आखिरत व परलोक की यात्रा का समय आया तो कुछ ऑलिया अळ्लाह ने सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को सपने में देखा के आदेश कर रहे हैं- अल्ला तआला के मित्र मोईनउद्दीन सजज़ी आ रहे हैं, हम इन के स्वागत के लिए आए हैं।

देहान्त के समय आप की पेशानी पर ये नुरानी लिखिवट जगमगा रही थी-

ये अल्लाह तआला के प्रिय हैं जो अल्लाह की मुहब्बत में देहान्त कर गए।

आप रहमतुल्लाहि अलैह की पावन जात से बिना अनुसार धर्म व जाति सभी आशिर्वाद व फैज़ पाया करते हैं, आप का जन्म व देहान्त के वर्ष से संबंधित अनेक कथन आए हैं, आप का देहान्त 6 रज्जब 633 हिज्री सोमवार के दिन हुआ।

आपकी औलाद

मोइनुल अरवाह में व्याख्या है के हज़रत ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह को हज़रत बीबी उम्मतुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहा से 2 नंदनः-

(1)- हज़रत खाजा फक़्रुद्दीन अबुल क़ैर रहमतुल्लाहि अलैह एवं
(2)- हज़रत खाजा हिस्सामुद्दीन अबु सालेह रहमतुल्लाहि अलैह तथा एक बेटीः

(1)- हज़रत बीबी हाफिज़ जमाल ताजुल मसतूरात रहमतुल्लाहि अलैहा हैं।

और हज़रत बीबी असमत रहमतुल्लाहि अलैहा से एक नंदनः

हज़रत खाजा ज़ियाउद्दीन अबु सईद रहमतुल्लाहि अलैह है।

आपकी करामतः

हज़रत ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह की असीमित करामते हैं। यहाँ आशीष के लिए चंद करामतें वर्णन की जाती हैः-

अना सागर एक लोटे में

एक बार हज़रत खाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह के एक सेवा अनासागर से वुज़ू के लिए पानी लेने गए तो वहाँ नित्य के विरुद्ध राजा के सिपाही पहरा दे रहे थे।

जब सेवक ने लोटे में पानी भरना चाहात तो सिपाहियों ने कठिन रूप से मना कर दिया तथा कहा के अब तुम इस को नहीं छू सकते हो, तालाब के पानी को गन्दा मत करो। सेवा ने कहा के पानी तो जानवरों पर भी बन्द नहीं किया जाता, हम तो मनुष्य है।

इस पर सिपाहियों ने कहा के तुम हैवानों से भी दुष्टतर हो। सेवक ने आकर जब आप को सारी घटना सुनाया तो आप ने फरमाया के सिपाहियों से कहो के इस बार एक लोटे पानी ले लेने दो फिर हम अपना कोई और प्रबन्ध कर लेंगे।

आप के आदेश पर जब सेवक फिर से तालाब पर पानी लेने गया तो सिपाहियों ने हंसी उड़ाते हुए कहा के आज लोटा भर लो इस के बाद तुम्हें यहाँ से पानी लेने की आज्ञा नहीं होगी।

अर्थात सेवक ने हज़रत ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह के आदेश के अनुसार वह लोटा भर लिया। राजपूत सिपाहियों के साथ साथ मुसलमान सेवक पर भी हैरतों के पर्वत टूट गए वह ये देख कर आश्चर्य में पढ़ गए के अनासागर तालाब का सारा पानी एक छोटे से बरतन में समेट कर आ गया।

जिस तालाब पर सिपाही घमण्ड कर रहे थे वह पानी से खाली हो चुका था। इस जाति के नज़दीक ये जादूगरी का एक विशाल प्रदर्शन था। ये देख कर राजपूत सिपाही वहाँ से भयभीत हो कर भाग खड़े हुए।

आप के सेवक भी हज़रत की सेवा में वापस आए तथा आप को सारी घटना सुनाई। पूरे अजमेर नगर में हंगामा सा ता अनासागर तालाब के सूख जाने की सूचना सब के लिए भौचक्का थी। पृथ्वी राज मुसलमानों के बढ़ते हुए प्रभाव को प्रत्येक स्थिति में रोकना चाहता था, मंत्रणाकार व

सलाहकारों ने इसे सुझाव दिया के इस मुसलमान फक़ीर का सामना हिन्दू जादुगर ही कर सकते हैं।

परन्तु इस से पूर्व अजमेर नगर के चंद सम्मानित अनासागर तालाब की पूर्व स्थिति बहाल करने की विनती लेकर आप की सेवा में उपस्थित हुए तथा निवेदन किया के यदि तालाब का पानी इसी प्रकार सूखा रहा तो बहुत सारे मनुष्य पानी के बिना मर जाएँगे।

अर्थात आप ने इसलाम की रवादारी का प्रदर्शन करते हुए कहाः ये तो सत्य के आज्ञालंघनों के लिए एक छोटी सी झलक है, वरना हमारा धर्म तो किसी कुत्ते को भी प्यास से तड़पता हुआ नहीं दे सकता।

ये कह कर आप रहमतुल्लाहि अलैह ने अपने सेवक को आदेश दिया के बरतन का पानी तालाब में वापस ड़ाल दिया जाए। जब लोटे का पानी आप के आदेश से तालाब में ड़ाला गया तो लोग देख कर ये आश्चर्य रह गए के तालाब एक बार फिर पानी से भर हुआ है।

मूर्ती पूजा करने वालों और पृथ्वीराज के लिए हज़रत ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह की ओर से ये एक बहुत बड़ा सन्देश था। जिसे समझने तथा इस पर अमल करने के बजाए वह सामना करने पर उतर आया इसलाम इसलाम वासियों के विरुद्ध साजिश रचाने लगा।

हज़रत ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह एवं आप की सेवा में रहने वाले दरवेशियों पर कठोरता करने लगा।

इसलाम की सेना को भारत में आने की आज्ञा

जब पृथ्वीराज – से बाज़ नहीं आया एवं अत्याचार की सीमा पार कर दिया तो हज़रत ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह ने अपनी आत्मिक व रूहानी शक्ति के द्वारा अत्याचार की सलतन्त का पक्ष उलट दिया तथा

हिंदुस्तान की धरती में अमन व शान्ति की वायु फैलाते हुए हुकुमत की भाग-दौड़ सुल्तान मअज़उद्दीन शहाबउद्दीन ग़ौरी के हवाले फरमा दी तथा संप्रदाय को पृथ्वीराज की कठोरता से मुक्ति दिला दी।

जैसा के शैख मुहखिख हज़रत अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैः आप पृथ्वीराज के राज्य में अजमेर आए एवं अल्लाह तआला की इबादत में व्यस्त हो गए। पृथ्वीराज इस ज़माने में अजमेर में ही निवास था।

एक दिन इस ने आप के एक मुरीद को किसी कारण से सताया, आप ने कहला भेजा के इसे मत सताओ! किन्तु इस का सर घमण्ड व गर्व से भरा हुआ था। वे बाज़ ना आया तथा इस मुरीद के बारे में धृष्ट कथन कहे तो आप ने फरमयाः

पृथ्वीराज को जीवित गिरफ्तार कर के मैं ने सेना को इसलाम के साथ में दे दिया, इन्हीं दिनों मैं शहाबउद्दीन ग़ौरी सेना लेकर गज़नी से भारत पर आक्रमण किए, पृथ्वीराज ने सामना किया किन्तु अल्लाह तआला के आदेश से जीवित गिरफ्तार हो गया।

(अखबारुल अखयार, पः 55, मिरातुल असरार, पः 599, सियरुल ऑलिया, पः 56)

जैसे-जैसे इसलाम सामान्य होता गया, इसलाम के विरोधियों में क्रोध भड़क उठा, एक व्यक्ति अपवित्र व अशुद्ध उद्देश्य से आप पर आक्रमण हुआ, इस समय आप नमाज़ में व्यस्त थे। नमाज़ से मुक्त होने के बाद जब सेवकों ने सूचना दी तो आप उठे एवं मुठ्ठी भर मिट्टी उठा कर इस पर आयतुल कुरसी दम की तथा शत्रु की ओर फैंक दिया।

वह मिट्टी जिस व्यक्ति पर पड़ी इस का शरीर सूखा हो गया, एवं वह बेबस हो कर रह गया, ये देख कर सब लोग वहाँ से भाग गए, इस से

स्पष्ट होता है के हज़रत ग़रीब नवाज़ की विलायते-मुहम्मदी थी, अतः ये के जब विरोधियों ने देखा के हज़रत खाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह का सामना करना सम्भव नहीं तो उन्हों ने लड़ाई छोड़ दी।

(इख्तेबास उल अनवार, 362/363)

यहाँ सीमित रूप से हज़रत ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह की व्यक्तित्व, जीवन, सोंच-विचार व शिक्षण से संबंधित वर्णन किया गया है। आप रहमतुल्लाहि अलैह के धन्य जीवन का प्रत्येक पहलू उच्च एवं प्रत्येक पल दीपक व रोशन है।

अल्लाह तआला से दुआ है के हमें हज़रत ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह के शिक्षण पर अमल करने की मार्गदर्शन प्रदान करे तथा आप के बरकतों से हमें संबोधित करे।

आमीन